भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खण्ड–XXVII अंक–02 31 जनवरी, 2022

अहङ्कारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः। मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः।।

वे अहंकार, बल, घमण्ड, कामना और क्रोधादि के परायण और दूसरों की निन्दा करने वाले पुरुष अपने और दूसरों के शरीर में स्थित मुझ अन्तर्यामी से द्वेष करने वाले होते हैं। **श्रीमद्भगवद्गीता 16/18**

गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न

26 जनवरी, 2022 को 73वां गणतंत्र दिवस संस्थान के डोगरा हॉल में देश प्रेम भरे वातावरण में पूरे उत्साह, जोश व उल्लास के साथ मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. वी. रामगोपाल राव ने नियत समय पर ध्वजारोहण करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया। तत्पश्चात् राष्ट्रगान से पूरा परिसर गूंज उठा। इस दौरान बी.आर.सी.ए. द्वारा देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए गये तथा राष्ट्रीय समर स्मारक पर एक वीडियो प्रस्तुति की गई। कोरोना महामारी के कारण सीमित उपस्थिति के साथ यह समारोह कोविड–19 के दिशा–निर्देशों का पालन करते हुए मनाया गया।

निदेशक महोदय का उद्बोधन

(अनुदित सार)

निदेशक महोदय ने संस्थान के सभी संकाय, अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थीगण एवं आई.आई.टी. दिल्ली के परिसरवासियों को 73वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर हार्दिक बधाई दी। आपने सर्वप्रथम प्रो. डी.टी. साहनी (मानद प्रोफेसर, IDDC) को पद्मश्री पुरस्कार प्राप्ति पर बधाई देते हुए कहा कि प्रो. साहनी को यह सम्मान इलैक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (EVM) के विकसित व अद्यतन करने के लिये गठित समिति जिसमें IIT दिल्ली, IIT मुम्बई, IIT भिलाई के वर्तमान में निदेशक तथा कुछ अन्य सदस्यों के साथ समिति के अध्यक्ष के रूप में लगातार लगभग एक दशक तक कार्य हेतु किया गया। आज जो ई.वी.एम. देश में उपयोग की जा रही है उनको विकसित करने में प्रो. साहनी द्वारा नेतृत्व किया गया।

निदेशक महोदय ने इस अवसर पर संस्थान की उपलब्धियों पर ध्यान केन्द्रित किया।

प्रो. राव ने कहा कि IIT दिल्ली देश के राष्ट्रीय ध्वज के लिये उन्नत गुणवत्ता वाला कपड़ा (Advanced fabric) तैयार कर रहा है। राष्ट्रीय ध्वज बनाने के लिये इस प्रकार की सामग्री का चयन किया जा रहा है, जिससे वह भारत की विविध जलवायु व भौगोलिक/मौसमी परिस्थितियों में भी टिकाऊ बना रहे तथा वजन भी अधिक न हो।

IIT दिल्ली द्वारा कोविड–19 संबंधित योगदान पर प्रकाश डालते हुये उन्होनें कहा कि कोविड–19 के दौरान हमारे संस्थान ने सभी जरूरी तकनीकों जैसे कम कीमत पर RTPCR किट, रेपिड एन्टिजेन्ट किट मात्र 50 रु. में तथा PPE किट, मास्क तथा कवरऑल को लॉच किया तथा कई लाख लोगों तक पहुंचाने का कार्य किया।

निदेशक के रूप में संस्थान में यह मेरा छठा गणतंत्र दिवस समारोह है। मुझे महसूस होता है कि IIT दिल्ली जैसे संस्थानों में आगे और परिवर्तन की जरूरत है। हमारे मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग को कई अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम लॉच करने तथा साइंस विभागों को और अधिक स्नातकोत्तर कार्यक्रमों पर गहन रूप से फोकस करने की आवश्यकता है। मुझे आशा है कि इन सब प्रयासों से भी हम UG विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाएंगे। IIT दिल्ली इस वर्ष पहली बार जे.ई.ई. (एडवांस्ड) परीक्षा के अतिरिक्त, UCEED परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों को बी.डेस. (B. Des.) कार्यक्रम के लिए डिजाइन विभाग में स्नातक के लिये प्रवेश करेगा।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

"संविधान भी एक सफर है"

श्याम बेनेगल द्वारा निर्देशित राज्य सभा टीवी पर प्रसारित सीरियल "संविधान भी एक सफर है" को समय निकाल कर अवश्य देखें। इस सीरियल के 10 एपिसोड में पूरे संविधान बनने की प्रक्रिया को दिखाया गया है।

यूट्यूब लिंक–
https://www.youtube.com/watch?v=0U9KDQnIsNk

निदेशक महोदय ने कहा कि इस वर्ष AIIMS-IITD संयुक्त पीएच.डी. कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है। उम्मीद है कि इस वर्ष पहला बैच इस कार्यक्रम को ज्वाइन करेगा। विद्यार्थियों के लिए जॉब अवसर महत्वपूर्ण हैं तथा इसके लिए उद्योगों से सम्पर्क जरूरी है। इंड्रस्टी कनेक्ट के लिये संस्थान में इंडस्ट्री डे मनाना शुरु किया था। पिछले वर्ष कोविड–19 के कारण यह आयोजित नहीं किया जा सका। पीएच.डी. आसियान (ASEAN) कार्यक्रम में IIT दिल्ली समन्वयक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हम अन्तरराष्ट्रीय पीएच.डी. छात्रों को आकर्षित करने का प्रयास कर रहे हैं। MFIRP, DRDO, AIIMS, ICAR के साथ हम 50 निधिबद्ध परियोजनाओं पर कई अनुसंधान कार्य कर रहे हैं। DRDO के साथ कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहे इसमें 150 पीएच.डी. छात्रों तथा 100 संकाय शामिल रहे।

हमारा संस्थान गुणवत्ता पर जोर देता है। मुझे खुशी है कि संस्थान के प्रबन्ध अध्ययन विभाग ने NIRF में देश में 5वां स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने कहा कि संस्थान के लिए तीन 'P' महत्वपूर्ण

हैं–Patent (पेटेन्ट), Publish (पब्लिश) तथा Prosper (समृद्धि) यह तीनों महत्वपूर्ण हैं तथा निरन्तर एक ही क्रम में चलते हैं। प्रकाशन के बिना कोई ज्ञान का इस्तेमाल या विस्तार नहीं कर सकता तथा पेटेन्ट तकनीक का हस्तांतरण करता है। यह सब आत्मनिर्भर भारत की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। सभी IITs के लगभग आधे अर्थात् 20 यूनिकोर्न देने वाला प्रथम संस्थान IIT दिल्ली है। उन्होंने संस्थान के पूर्व विद्यार्थियों (Alumni) से कनेक्ट को महत्वपूर्ण बताते हये उनके द्वारा संस्थान को दिए जा रहे धर्मादा राशि (Endowment) के लिये सराहना की और कहा कि इस दिशा में प्रतिवर्ष हम नये स्तर पर पहुंच रहे हैं।

प्रो. राव ने कहा कि हम अपने स्टाफ सदस्यों को अनदेखा नहीं कर सकते क्योंकि विद्यार्थियों तथा संकायों के बीच वह एक सहायक संरचना है, जो संस्थान विकास में महत्वपूर्ण है। संस्थान सभी सदस्यों को प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित करता है। हमें विद्यार्थियों को बेहतर छात्रावास तथा अन्य सुविधाएं देने की आवश्यकता है साथ ही साथ उन्होंने विद्यार्थियों तथा संकाय कनेक्ट को भी अत्यन्त महत्वपूर्ण बताया। IIT दिल्ली की संस्कृति गुरूकुल वाली संस्कृति है। संस्थान निरंतर अवसंरचना (Infrastructure) को बढ़ाने तथा वर्तमान अवसंरचना के अद्यतन करने के लिये प्रयासरत है, लेकिन अवसंरचना अनुरक्षण (Infrastructure Maintenance) का स्तर और ऊपर उठाने की आवश्यकता है। उन्होंने संस्थान में चल रही बहुत सी परियोजनाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि, ये सभी सुविधाएँ शीघ्र ही उपयोग के लिए उपलब्ध होंगी।

अंत में गणतंत्र दिवस के पावन अवसर पर निदेशक महोदय ने सभी को शुभकामनायें देते हुये संस्थान के दृष्टिकोण, लक्ष्यों तथा मूल्यों को याद दिलाते हुए कहा कि हमें अपने आदर्शों एवं मूल्यों के साथ रहकर वैज्ञानिक व तकनीकी शिक्षा और अनुसंधान में उत्कृष्टता द्वारा भारत और विश्व के लिए योगदान करना होगा।

जय हिन्द!

संस्थान के छात्र कुशाग्र वर्मा का गणतंत्र दिवस कार्यक्रम का संयोजन अदभुत रहा है। प्रो. प्रमीत के. चौधरी, सह संकायाध्यक्ष (छा.का.) द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम का समापन निम्न पंक्तियों द्वारा किया गया:

''बस यह बात हवाओं को बताये रखना
रोशनी होगी चिरागों को जलाये रखना
लहू देकर जिसकी हिफाजत की शहीदों ने
उस तिरंगे को सदा दिल में बसाएं रखना।''

–डॉ. नीरज चौरसिया,
प्रो. संतोष सत्या व इन्द्रमणि

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित संकाय एवं स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 31 जनवरी, 2022 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

प्रो. रबिशंकर चट्टोपाध्याय, प्रोफेसर, वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी विभाग

प्रो. रबिशंकर चट्टोपाध्याय ने 31 जनवरी, 1982 को संस्थान के वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी विभाग में लेक्चरर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 8 जून, 1990 में आपको सहायक प्रोफेसर तथा 1 अगस्त, 1997 को सह प्रोफेसर एवं 8 अगस्त, 2002 को प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया।

प्रो. चट्टोपाध्याय ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से टेक्सटाइल प्रौद्योगिकी में FIE उपाधि प्राप्त की इसके बाद आपने भा. प्रौ.सं. दिल्ली से एम.टेक. तथा पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आप 31 दिसम्बर, 1982 से वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी विभाग, IIT दिल्ली के साथ जुड़े हुए हैं। अपने कार्यकाल के दौरान, यू.जी. तथा पी.जी. स्तरों पर अध्यापन के अलावा, आपने IIT दिल्ली में वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी विभाग के अध्यक्ष; प्रोफेसर प्रभारी (योजना); अध्यक्ष, जे.ई.ई.; प्रोफेसर प्रभारी QIP/CEP; अरावली छात्रावास के वार्डन; SC/ST सम्पर्क अधिकारी तथा गिरनार छात्रावास के हाउस मास्टर जैसे कई प्रशासनिक पदों पर सेवाओं का निर्वाहन किया। आप अनुसंधान, परामर्श, सेमिनार आयोजित करने तथा उद्योगों एवं अकादमिक के अनुकूल पाठ्यक्रम बनाने में शामिल रहे हैं। आपको इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियर्स (इण्डिया) द्वारा प्रतिष्ठित इंजीनियर अवार्ड (2014) तथा मोनभुशों छात्रवृत्ति, जापान (1988) प्रदान की गई।

प्रो. चट्टोपाध्याय ने 14 डॉक्टरेट तथा 72 मास्टर थिसिस का मार्गदर्शन किया है तथा राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय पत्रिकाओं तथा सम्मेलन कार्यवाही में आपके लगभग 150 शोध पत्र प्रकाशित हुए। आप पुस्तक लेखन तथा पुस्तक चैप्टर्स, टेक्सटाइल पर मोनोग्राफ तथा NPTEL विडियो पाठ्यक्रम विकसित करने में शामिल रहे। आप 'दि इंस्टिट्यूट ऑफ इंजीनियर्स' तथा 'ISTE इण्डिया' जैसे कई प्रोफेशनल सोसाइटी के सदस्य रहे। आपने DST, AICTE, DRDO, KVIC, RuTAG द्वारा निधिबद्ध अनुसंधान परियोजनाओं का तथा रिलायन्स KVIC, राजस्थान खादी बोर्ड, PWC, वेलस्पन, वर्धमान ग्रुप ऑफ मिल्स से परामर्शी कार्यों का संचालन किया।

आपने इथोपिया टेक्सटाइल इन्डस्ट्री डिवेलपमेन्ट (ETIDI) तथा IIT दिल्ली के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के अन्तर्गत इथियोपिया टेक्सटाइल इन्डस्ट्री डिवेलपमेन्ट इंस्टिट्यूट (ETIDI) के तीन वर्षीय निर्माण कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समन्वयन किया।

वर्तमान में आप टेक्सटाइल इंजीनियरी, जापान की पत्रिका के अन्तरराष्ट्रीय सलाहकार बोर्ड के सदस्य; कॉर्डेज सेक्शॅनल केमेटी, TXD09, भारतीय मानक ब्यूरो (BIS) के अध्यक्ष तथा इंस्टिट्यूट ऑफ इजीनियर्स, भारत की पत्रिका के परामर्शी सम्पादक; TIT&S भिवानी के अध्ययन बोर्ड सदस्य; UP टेक्नीकल यूनिवर्सिटी के अध्ययन बोर्ड के सदस्य; नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ नेचुरल फाइबर इंजीनियरी ऐन्ड टेक्नोलॉजी (NINEFT), कोलकाता, निफ्ट की अनुसंधान सलाहकार बोर्ड के सदस्य; पाठ्यक्रम विकास समिति (FDDI) नोएडा के सदस्य; निदेशक मण्डल (नितिन स्पिनर्स, भीलवाड़ा), अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय, लखनऊ के सदस्य हैं।

अकादमिक के अलावा आप सामाजिक गतिविधियों में भी गहरी रुचि रखते हैं और वर्तमान में IIT दिल्ली की वसंत उत्सव समिति के अध्यक्ष तथा सर्वोजनिन दुर्गोत्सव समिति, विवेकानन्द विहार (एस.डी.ए.) के सचिव हैं तथा सक्रिय रूप से स्वामी

प्रणवानन्द इन्टरनेशॅनल स्कूल, गुरूग्राम से जुड़े हुए हैं।

सौम्य स्वभाव के प्रो. रबिशंकर चट्टोपाध्याय अपने संकाय साथियों, विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय संकाय रहे हैं।

प्रो. भुवनेश गुप्ता, प्रोफेसर, वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी विभाग

प्रो. भुवनेश गुप्ता ने 15 दिसम्बर, 1995 को संस्थान के वस्त्र एवं रेशा इंजीनियरी विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 31 जुलाई, 2002 में आपको सह प्रोफेसर तथा 11 अगस्त, 2008 को प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया।

प्रो. भुवनेश गुप्ता IIT दिल्ली मे पॉलिमर के प्रोफेसर हैं तथा कई अन्य अन्तरराष्ट्रीय निकायों, सोसाइटी ऑफ बायोमॉटिरियल्स आर्टिफिशियल ऑर्गन्स इण्डिया (दिल्ली), सोसाइटी ऑफ टिश्यू इंजीनियरी ऐन्ड रिजनेरेटिव मेडिसिन, भारत तथा बायोमॉटिरियल ऐन्ड टिश्यू इंजीनियरी पर इण्डो–इटेलियन फोरम के साथ–साथ एशियन पॉलिमर एसोशिएशन के अध्यक्ष हैं। आपने IIT दिल्ली से 1984 में अपनी पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की तथा पेरिस में पोस्ट–डॉक के रूप में कुछ वर्ष व्यतीत किए। इसके उपरान्त आपने फ्रॉस, स्वीडन तथा स्वीटजरलैण्ड में विभिन्न प्रयोगशालाओं में विभिन्न पदों पर रहते हुए 6 वर्षों तक कार्य किया तथा दिसम्बर 1995 को संस्थान में कार्यभार ग्रहण किया। आपने अपने करियर की शुरूआत उन्नत अनुप्रयोगों के लिए बहुलक पदार्थ के क्षेत्र में की। आप यूनिवर्सिटी ऑफ उप्पसाला, स्वीडन तथा INSERM पेरिस, फ्रॉस के सहयोग से पॉलिमर फक्शॅनलाइजेशॅन, बायोटेक्स्टाइल, बायोमॉटिरियल तथा टिश्यू इंजीनियरी में शामिल रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर आप एम्स, नई दिल्ली; पी.जी.आई, चण्डीगढ; पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ; NEHU शिलॉग तथा सिक्किम मणिपाल यूनिवर्सिटी गंगटोक के साथ अनुसंधान सहयोग में लगे रहे। आपने सिक्किम मणिपाल विश्वविद्यालय, गंगटोक में निदेशक (अनुसंधान) के रूप में संक्षिप्त कार्यभार सम्भाला था तथा पॉलिमर ऐन्ड बायोमॅटिरियल्स प्रोफेसर के रूप में वापस IIT सिस्टम में आए।

आप दुनिया के 2% शीर्ष पॉलिमर वैज्ञानिकों में से हैं तथा यूनिवर्सिटी में आपको पदकों से सम्मानित किया गया है। आप भारत सरकार की DBT टॉस्क फोर्स के सदस्य भी रहे हैं। आप कई पत्रिकाओं के सम्पादीय बोर्ड में भी हैं। कई पदकों तथा पुरस्कारों के विजेता डॉ. गुप्ता के अन्तरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में लगभग 200 प्रकाशन तथा भारत एवं विदेशों में 400 से अधिक सम्मेलन प्रस्तुतियाँ हैं तथा 30 पेटेन्ट का क्रेडिट आपको जाता है। आपके द्वारा लिखित 8 पुस्तकें अन्तरराष्ट्रीय प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित की गई। यूरोप की कई प्रयोगशालाओं में आपको व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया है। आपका समूह बड़ी संख्या में डॉक्टरेट छात्रों तथा वैज्ञानिकों के मजबूत समर्थन के साथ पॉलिमेरिक बायोमॅटिरियल्स तथा बायोमेडिकल इंजीनियरी के विभिन्न क्षेत्रों में लगा हुआ है।

प्रो. भुवनेश गुप्ता के शब्दों में ''IIT दिल्ली में प्रवास के दौरान की यात्रा अत्यन्त सुखद रही, चारों ओर अच्छे लोग तथा अच्छा माहौल रहा। मैं इस जगह की प्रशंसा करता हूं, जहां मैने स्वतंत्र सोच तथा सहयोगी गतिविधियों का आनन्द लिया। मुझे स्वयं का क्षेत्र चुनने तथा उसमें उत्कृष्टता हासिल करने की स्वतंत्रता थी। मुझे विश्वास है कि IIT की ऐसी समृद्ध परम्पराएं शाश्वत दर्शनशास्त्र के रूप में बनी रहेंगी तथा देश को तकनीकी रूप से और अधिक गतिशील बनाएगी''।

मृदुभाषी स्वभाव के प्रो. भुवनेश गुप्ता अपने संकाय साथियों, विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय संकाय रहे हैं।

प्रो. मंगलपाडी राजाराम शेनॉय, प्रोफेसर, भौतिकी विभाग

प्रो. मंगलपाडी राजाराम शेनॉय ने 5 सितम्बर, 1988 को संस्थान के भौतिकी विभाग में वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 12 अक्टूबर, 1995 में आपको सहायक प्रोफेसर तथा 13 जनवरी, 2000 को सह प्रोफेसर एवं 26 अक्टूबर, 2006 को प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया गया।

प्रो. एम. आर. शेनॉय ने 1979 में मैसूर विश्वविद्यालय से भौतिकी में एम.एससी. की उपाधि तथा 1987 में IIT दिल्ली से रेशा तथा एकीकृत प्रकाशिकी के क्षेत्र में पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त की। आप 1990 में 10 महीने के लिए इलैक्ट्रिकल ऐन्ड इलैक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरी विभाग, ग्लासगो यूनिवर्सिटी, ग्लासगो, यू.के. में विजिटिंग वैज्ञानिक रहे तथा 1992, 1997, 2006 तथा 2008 में एकीकृत ऑप्टिकल उपकरणों पर सहयोगात्मक अनुसंधान के लिए आपने नीस यूनिवर्सिटी–सोफिया एंटीपोलिस, फ्रॉस में अल्पावधि विजिट किए।

ब्लैकबोर्ड का उपयोग करके कक्षा में शिक्षण आपका जनून रहा है। इतने वर्षों में आपके द्वारा पढ़ाए गए पाठ्यक्रमों को अच्छी प्रतिक्रिया रेटिंग के साथ छात्रों द्वारा बहुत सराहा गया। सेमीकण्डक्टर ऑप्टोइलैक्ट्रॉनिक्स पर 46 व्याख्यान (कक्षा व्याख्यान) पाठ्यक्रमों में से एक को NPTEL कार्यक्रम (2014) के लिए लाइव रिकॉर्ड किया गया था तथा ऑप्टिक्स पर 18 व्याख्यानों का एक और विडियो व्याख्यान मॉड्यूल IIT-PAL कार्यक्रम (2018) के लिए रिकॉर्ड किया गया था।

सभी व्याख्यान नेट से डाउनलोड करने के लिए उपलब्ध हैं तथा विद्यार्थियों द्वारा You Tube पर व्यापक रूप से देखे जाते हैं। आप IIT दिल्ली के ''टीचिंग एक्सिलेन्स अवार्ड'' के प्राप्तकर्त्ता हैं।

आपने कई वर्षों से फाइबर ऑप्टिक्स, ऑप्टोइलैक्ट्रोनिक्स तथा नॉनलिनियर ऑप्टिक्स के व्यापक क्षेत्र में विभिन्न शोध समस्याओं की जाँच की है। आपने प्रमुख अन्वेषक तथा सह–अन्वेषक के रूप में कई प्रायोजित अनुसंधान एवं विकास (R&D) परियोजनाएँ की हैं तथा प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर परामर्श परियोजनाओं से भी जुड़े रहे हैं। आपने विभिन्न क्षमताओं से जनशक्ति प्रशिक्षण तथा विकास में भी योगदान दिया है। आपने दिल्ली तथा देश के कई कॉलेज/संस्थानों में बड़ी संख्या में व्याख्यान दिए तथा आमंत्रित वार्त्ता की हैं। आपने भारत तथा विदेशों में राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलनों में कई आमंत्रित वार्त्ता तथा योगदान पेपर्स (contributory papers) प्रस्तुत किए हैं। आपने देश में DAE, DRDO प्रयोगशालाओं के लिए 'डिजाइन एवं विकास' प्रकार की परियोजनाएं की। एम.टेक. स्तर पर प्रस्तावित अधिकांश परियोजनाओं को इन प्रायोजित परियोजनाओं के साथ जोड़ा गया, जिसके परिणामस्वरूप छात्रों को व्यवहारिक प्रशिक्षण भी हुआ। आपने

बी.टेक./एम.एससी./एम.टेक. तथा पीएच.डी. स्तरों पर बड़ी संख्या में छात्र परियोजनाओं का पर्यवेक्षण किया है।

मिलनसार स्वभाव के प्रो. मंगलपाडी, राजाराम शेनॉय, अपने संकाय साथियों, विद्यार्थियों एवं स्टाफ सदस्यों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय संकाय रहे हैं।

श्री गुरुविन्दर सिंह कोहली (26171), तकनीकी अधीक्षक, कम्प्यूटर सेवा केन्द्र

श्री गुरुविन्दर सिंह कोहली ने 3 अप्रैल, 1981 को संस्थान में कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 2 मार्च, 1987 को आपको वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में चयनित किया गया। 28 अप्रैल, 1992 को आपको तकनीकी सहायक के रूप में चयनित किया गया। 1 मई, 2004 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको तकनीकी अधीक्षक के रूप में पदोन्नत किया गया। 28 अप्रैल, 2012 को एम.ए.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको लेवल–8 में उन्नयन दिया गया। आपने लंबे समय तक संस्थान के कर्मचारी यूनियन के महासचिव के रूप में सेवाएं दी। सरल स्वभाव व अध्यात्मिक प्रवृति के श्री गुरुविन्दर सिंह कोहली एक लोकप्रिय, कर्मठ एवं मेहनती तकनीकी अधीक्षक रहे हैं।

श्री प्रदीप कुमार (26164), तकनीकी अधीक्षक, रसायनिक इंजीनियरी विभाग

श्री प्रदीप कुमार ने 19 जुलाई, 1988 को संस्थान में वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 अगस्त, 1996 को आपको आर.सी.डी.एस. के अन्तर्गत वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक (प्रवर कोटि) के रूप में चयनित किया गया। 1 मई, 1998 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको कनिष्ठ तकनीकी सहायक के रूप में मैप किया गया। 1 अगस्त, 2008 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको उन्नयन दिया गया। 19 जुलाई, 2018 को एम.ए.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको उन्नयन दिया गया। श्री प्रदीप कुमार लोकप्रिय, कर्मठ एवं मेहनती तकनीकी अधीक्षक रहे हैं।

श्री राम सिंह राठौर (26342), सहायक अभियन्ता, निर्माण संगठन

श्री राम सिंह राठौर ने 1 सितम्बर, 1994 को संस्थान में कनिष्ठ अभियन्ता (विद्युत ग्रेड–II) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 मई, 1998 को आर.सी.पी.एस के अन्तर्गत कनिष्ठ अभियन्ता के रूप में मैप किया गया। 1 अक्टूबर, 2006 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको सहायक अभियन्ता (विद्युत) के रूप में पदोन्नत किया गया। 1 सितम्बर, 2014 को एम.ए.सी.पी.एस. के अंतर्गत आपको 4800 रु. ग्रेड वेतन में उन्नयन दिया गया। संस्थान में हिन्दी कक्ष द्वारा आयोजित हिन्दी पखवाड़े के दौरान आपने स्वरचित कवितापाठ प्रतियोगिता एवं अन्य प्रतियोगिताओं में भाग लिया एवं कई बार पुरस्कार भी प्राप्त किए। हिन्दी के प्रति आपका हमेशा रुझान रहा है। श्री राम सिंह राठौर कर्मठ, मेहनती एवं मिलनसार सहायक अभियन्ता रहे हैं।

श्री विक्रम सिंह रावत (26200), कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक, अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग

श्री विक्रम सिंह रावत ने 10 मई, 1985 को संस्थान में कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 जून, 1993 को आपको आर.सी.डी.एस. के अन्तर्गत वरिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में चयनित किया गया। 3 दिसम्बर, 2004 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको तकनीकी सहायक के रूप में नियुक्त तथा कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक के रूप में पुनः पदनामित किया गया। 4 दिसम्बर, 2014 को आपको 4600 रु. ग्रेड वेतन में उन्नयन दिया गया। श्री विक्रम सिंह रावत कर्मठ, मेहनती एवं मिलनसार व्यक्तित्व के कनिष्ठ तकनीकी अधीक्षक रहे हैं।

श्री चन्दन सिंह (26513), कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक, रासायनिक इंजीनियरी विभाग

श्री चन्दन सिंह ने 26 अक्टूबर, 1984 को संस्थान में अटेन्डेन्ट के रूप में वेतनमान 210–290/800–1150 रु. में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 नवम्बर, 1992 को आर.सी.डी.एस के अन्तर्गत आपको 3050–4590 रु. के वेतनमान में पदोन्नत किया गया। 1 अप्रैल 2000 को आपको कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में मैप किया गया। 1 अप्रैल, 2010 को एम.ए.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको उन्नयन दिया गया। श्री चन्दन सिंह एक कर्मठ, मेहनती एवं मिलनसार कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक रहे हैं।

श्री सुरेश चन्द्र (26504), कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक, रसायन विज्ञान विभाग

श्री सुरेश चन्द्र ने 6 फरवरी, 1984 को संस्थान में अटेन्डेन्ट' (210–290/800–1150) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 मार्च, 1992 को आर.सी.डी.एस के अन्तर्गत आपका चयन 950–1400/3050–4590 रु. के वेतनमान में किया गया तथा 21 मार्च 2000 को कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक के रूप में मैप किया गया। 21 मार्च, 2010 को एम.ए.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको 2400 रु. ग्रेड वेतन में उन्नयन दिया गया। श्री सुरेश चन्द्र एक मेहनती एवं कर्मठ कनिष्ठ प्रयोगशाला सहायक रहे हैं।

श्री राम खेलावन (50635), अटेन्डेन्ट, उपनिदेशक, नीति एवं योजना कार्यालय

श्री राम खेलावन ने 2 जुलाई, 1990 को संस्थान में अटेन्डेन्ट के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 अगस्त, 2002 को आर.सी.पी.एस के अन्तर्गत आपको उन्नयन दिया गया। 2 जुलाई, 2010 को आर.सी.पी.एस./एम.एस.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको उन्नयन दिया गया। श्री राम खेलावन कर्मठ, मेहनती एवं मिलनसार अटेन्डेन्ट रहे हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त संकाय एवं स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके एवं उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 1772, 7144, 1242

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com